Page No. : 20-26

SHODH GURU

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF EDUCATION

महात्मा गाँधी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के अनुप्रयोग : भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन 1917-1947 के संदर्भ में

रवि कुमार (शोध छात्र)

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

शोध सारांश

महात्मा गाँधी भारतीय राजनीति का एक ऐसा व्यक्तित्व है जिनके बारे में भारत देश का हर नागरिक जानता है एवं उनके विचारों को फलीभूत होते देखना चाहता है। महात्मा गाँधी न केवल कर्मयोगी थे अपितु विश्व में उच्च कोटि के मानवता के लिये उतने ही विचारक थे। आज भी उनके विचार और दर्शन सम्पूर्ण मानवता के लिये उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने सामयिक परिस्थितियों में। स्वाधीनता के बाद गाँधीजी का नाम हम सब लेते तो रहते हैं, परन्तु उनके विचारों और कार्यों को तथा देश के लिये उनकी त्याग की भावनाओं को भूलते जा रहे हैं। लेकिन आज वह समय आ गया है जब महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को विश्वव्यापी स्तर पर व्यवहार में लाना आवश्यक है। गाँधीजी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह जैसे विचार स्वतंत्रता आन्दोलन में इसकी विविधता एवं महानता व गहनता इतनी अत्यधिक है कि उसे भुलाया नहीं जा सकता। उनके विचार एक से बढ़कर एक है और यह सारे विचार एक सुख की अनुभूति कराते हैं। यह विचार बताते हैं कि सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह के विचारों को समझने का अब समय आ गया है अगर हमें सही व्यवस्था को चुनना है तो गाँधीजी के विचारों को पढ़ना होगा, उन्हें समझना होगा और यही नहीं उन्हें लागू करने के लिये हमें हर प्रकार से प्रयत्न करने होगे। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य महात्मा गाँधी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के अनुप्रयोग भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में इनकी भूमिकाओं को लेखबद्ध करना है।

शब्द कुंजी- भारतीय राजनीति, कर्मयोगी, सम्पूर्ण मानवता, स्वाधीनता, स्वतंत्रता आन्दोलन

प्रस्तावना

सामान्य प्राणियों में मात्र एक मनुष्य जाति की यह विशेषता है कि अपने सम्पूर्ण विनाश की तैयारियाँ कर चुका है। पेट भरा होने पर भी आग्रह करने पर कुछ खा लेता है। अतः मानव जीवन की समस्या का समाधान कठिन है। उसका मन नट के समान कभी विनोदी, कभी विवादी और कभी इन दोनों से परे अति सौम्य होता है। यही गाँधी दर्शन का मूल आधार है कि मानव स्वभाव से साधु है, परिस्थितियाँ उसे दुवृन्त कर देती हैं। गाँधी के अनुसार जब ईश्वर एक है तो मानवता भी एक और

अखण्डित है इसलिये गाँधी मानव सेवा को ही ईश्वर की पूजा समझते थे। गाँधीजी का जीवन कुछ नहीं, अपितु भारतीय जीवन परम्परा का नवीनतम संस्करण था। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, कायिक श्रम, सर्वधर्म समभाव, नम्रता आदि मानवीय गुणों को धारणकर वे महात्मा कहलाये। गाँधी जी ने इन गुणों को धारण कर अपने जीवों को उदात्त और पावन बनाया। महात्मा गाँधी के पिता करमचन्द गाँधी भी एक दीवान थे। महात्मा गाँधी उनके सबसे छोटे पुत्र थे। महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा में अपने पिता के सम्बन्ध में लिखा है-"पिता कुटुम्ब प्रेमी, सत्यप्रिय, शूर, उदार किन्तु क्रोधी थे। उनका आखिरी विवाह 40वें साल के बाद हुआ था। हमारे परिवार में और बाहर भी उनके विषय में यह धारणा थी कि वे रिश्वतखोरी से दूर भागते हैं और इसलिये शुद्ध न्याय करते हैं। राज्य के प्रति वे बहुत वफादार थे"।[1] महात्मा गाँधी विश्व इतिहास की एक ऐसी अद्भुत और अपूर्व शख्सियत हैं, जिन्होंने चिन्तन और आचरण दोनों स्तरों पर परम्पराओं और सीमाओं का अतिक्रमण किया है। गाँधी ऐसे अलौकिक योद्धा हैं, जो सदा लोक छोड़कर चले। बड़ी बात यह है कि उन्होंने सदा लीकें तोड़ी हैं, वरन् बड़ी बात यह है कि उन्होंने नयी लीकें रची। विश्व इतिहास की महान् विभूतियों में गाँधी वह व्यक्ति हैं, जिन्हें वर्गीकृत करना कठिन है। गाँधी आजादी की लड़ाई के अपने पूर्ववृत्ति में पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने इस महान देश की आत्मा को पहचाना, समूचे देश को आलोकित किया और सारा देश इस फकीर के पीछे चल पड़ा। गाँधी चिन्तन को आचरण में ढालने का प्रतिमान है और समकालीनों से आजादी की लड़ाई में हर कहीं कई कदम आगे नजर आते हैं। उनके युवा अनुयायी भी उनके साथ कदमताल नहीं कर पाते। गाँधी आजीवन अपना सलीब साथ लिये चलते नजर आते हैं। उनका फक्कड़पन कबीर और मंसूर की याद दिलाता है और सत्य के लिये उनका अदम्य आग्रह सुकरात का। आजादी की लड़ाई के अनेक प्रसंगों में वे हठयोगी नजर आते हैं। बेशक वे निर्मोही हैं और उनका मोह पार्थिव तत्त्व से नहीं है। उनका साध्य पवित्र है और साधना भी पूत। वे किसी की परवाह नहीं करते। किसी की कोई फिक्र नहीं बेफिक्र बेपरवाह, हद छोड़कर, बेहद हुई शख्सीयत हैं "गाँधी"। उन्हें गूगी या विदेशी जुबान में आजादी नहीं चाहिये। उनकी आजादी की लडाई हिन्दी की लडाई भी है। आजादी के मौके पर जब बी.बी.सी. का संवाददाता साक्षात्कार के लिये आता है, बापू कहते हैं, "जाओ, दुनिया से कह दो गाँधी अंग्रेजी भूल गया। "उनके सोम के फलक में हर कोई है ब्राह्मण भी, दलित भी, हिन्दू भी, मुसलमान भी. शिक्षा भी, सेवा भी, यस्कार, मेहतर, हर कोई उनकी चिन्ता के दायरे में है। अलबर्ट कि यदि इस धरती पर हाडमांस का ऐसा भी कोई आदमी हुआ करता था"।[2] गाँधीवाद बीसवीं सदी का एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। गाँधीजी के विचार नवीन नहीं थे, अपितु उन्होंने प्राचीन विचारों की नवीन ढंग से व्याख्या प्रस्तुत की। गाँधी जी ने भारतीय संस्कृति के प्राचीन विचारों और सिद्धान्तों को भी सत्य और समय की कसौटी पर परख कर उन्हें भारतीय परिस्थितियों में नवीन रूप प्रदान किया। अपने पत्र "यंग इण्डिया" में स्वय गाँधी जी ने लिखा है कि "मैंने किसी नवीन सिद्धान्त को सृष्टि न करके, प्राचीन भारतीय सिद्धान्तों को ही नवीन रूप से दोहराने का प्रयत्न किया"।[3]

मूल्यों सत्य, अहिंसा, भ्रातृत्व, करुणा, सादगी तथा आध्यात्मिक चेतना का अपने आचरण और व्यवहार में सतत् परिवर्तन करते रहे। उनका व्यक्तित्व इतना अनुकरणीय था कि आज सम्पूर्ण विश्व में उनके दर्शन एवं विचारों के अध्ययन-अध्यापन के प्रति जहाँ आकर्षण है, वहीं भौगोलिक सांस्कृतिक विविधता के बावजूद राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवहार में उनकी वैचारिकी के आधारभूत मूल्यों के अनुकरण पर जोर दिया जा रहा है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी महात्मा गाँधी के प्रति जितना विचार किया जाये, लिखा जाये उतना ही कम है। भारतीय राजनीति एवं राजनीतिक चिन्तन परम्परा में महात्मा गाँधी का अपना वैशिष्ट्य है। गाँधीजी की चिन्तन दृष्टि की अपनी मौलिक विशेषताएँ है।। उनको समझे

बिना गाँधीवाद को ठीक ढंग से समझा नहीं जा सकता। जिसमें उन्होंने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह आदि सम्बन्धी आदर्शों का प्रशिक्षण ही नहीं अपितु प्रयोग भी किया। महात्मा गाँधी ने न केवल राजनीति की सत्य एवं अहिंसा की नीव पर खड़ा करने का प्रयास किया, अपितु अपने जीवन के समस्त व्यवहार को सत्य की प्रयोगशाला माना। वे अपने जीवन को सत्य के प्रयोग की संज्ञा देते थे। उनके विचारों पर जिन-जिन तत्त्वों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गाँधीजी के विचारों पर भारत की प्राचीनकाल की परम्पराओं का भी प्रभाव पड़ा। और इसी प्रभाव के कारण ईश्वर में उनका प्रगाढ विश्वास था। इसी सम्बन्ध में उन पर धार्मिक ग्रन्थों का भारी प्रभाव रहा था। इनमें कई वेद व उपनिषद थे जिनमें लिखी विज्ञान से सम्बन्धित टिप्पणियाँ शामिल थीं। ऋग्वेद में वर्णाश्रम प्रणाली और उपनिषदों के अहिंसा दृष्टिकोण का भी उनके जीवन दर्शन पर प्रभाव पड़ा। गाँधीजी तुलसीदास और रामचरितमानस से भी बहुत अधिक प्रभावित थे। नरसी मेहता के भवन वैष्णव जन तो तैणे रे कहिये का भी गाँधी पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा। गाँधीजी के विचारों में बौद्ध व जैन धर्म की शिक्षाओं का भी गहरा प्रभाव रहा है। उनके अहिंसा सम्बन्धी विचार इन्हीं घमाँ की शिक्षा की देन है। गाँधीजी भी "अहिंसा परमो धर्मः" को हर मनुष्य का प्रथम कर्तव्य मानते थे। गाँधी पर उनकी माता की धर्मपरायणता और अच्छे संस्कारों का अटूट प्रभाव था। ये अपने पिता की सादगी तथा सत्यता से भी काफी प्रभावित हुए थे।

गांधी जी के सत्य पर विचार

सत्य शब्द सत से बना है। सत् का अर्थ है अस्ति, सत्य अर्थात अस्तित्व। सत्य के बिना किसी चीज की हस्ती नहीं है। परमेश्वर का सच्चा नाम ही सत् अर्थात् सत्य है। इसलिये परमेश्वर सत्य है। यह कहने की अपेक्षा सत्य ही परमेश्वर है कहना अधिक उचित है। इस प्रकार गाँधीजी का सर्वोच्च सत्य एवं वास्तविकता जो कि ईश्वर है. में दृढ विश्वास है। गाँधीजी ने माना कि आत्मसंयम एवं आत्मशुद्धि द्वारा शाश्वत् सत्य की अनुभूति की जा सकती है। सत्य को गाँधीजी ने आत्मानुशासित अन्तःकरण की आवाज कहा है। गाँधीजी का सत्य व्रत-पातंजलि के योगसूत्र के पाँच यम में से एक के समान है। सत्य गाँधीजी के चिन्तन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है. चूंकि गाँधी का चिन्तन एवं कर्मण्यता "सत्य" से ही आधार प्राप्त करती है। गाँधीजी का सम्पूर्ण जीवन सत्य के ज्ञान एवं अन्वेक्षण में ही व्यतीत हुआ है। दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी को उनके एक सहयोगी एम.डी. पोलक ने गाँधी को 'सत्य का प्रहरी कहा था। गाँधीजी की दृष्टि में सत्य जीवन के प्रत्येक कर्म एवं गतिविधि का निर्देशक है। सत्य से अनुशासित जीवन के प्रत्येक कर्म एव गतिविधि का निर्देशक है। सत्य से अनुशासित जीवन ही "आत्मानुभूति" की ओर प्रथम चरण है। गाँधीजी के अनुसार सत्य का साधक समाज में व्याप्त अन्याय शोषण या उत्पीडन को हर बुराईयों के उन्मूलन के प्रति समर्पित कर देना ही उसकी सत्य साधना का आयाम है।

गाँधीजी ने सत्य का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया है। विचार, वाणी और आधार में सत्य का होना ही सत्य है। वे सत्य और ईश्वर में कोई भेद नहीं मानते थे। गाँधीजी ने ईश्वर को सत्य प्रेम एवं अन्तकाल की शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने ईश्वर सत्य है कथन को परिवर्तित करके "सत्य ही ईश्वर है कर दिया। उनकी यह अभिव्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। ईश्वर सत्य है" कहने से ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर की सत्ता में किसी को सन्देह नहीं करना चाहिये। किन्तु नास्तिक विचारधारा को स्वीकार करने वाले व्यक्ति इस तथ्य से कदापि सहमत नहीं हो सकते। इसलिये गाँधीजी ने "सत्य" को ईश्वर की संज्ञा प्रदान की है। ताकि इस धारणा को सम्पूर्ण मानव जाति अपना सके साथ ही नास्तिकों को भी कोई आपत्ति नहीं होगी, क्योंकि वे भी सत्य की खोज करना चाहते थे। अतः सत्य

एकता का मंत्र है। जहाँ भिन्न-भिन्न विचारधाराओं और मान्यताओं वाले व्यक्ति भी एकता के मार्ग की ओर अग्रसर होकर सत्य को अपना लेते हैं।

गाँधीजी के अहिंसा पर विचार

'महात्मा गाँधी का सम्पूर्ण जीवन, चाहे वह राजनीतिक स्वरूप का हो. आर्थिक हो या सामाजिक हो. आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था। उनका सन्देश भारत के आध्यात्मिक उत्थान के लिये था। "सत्य यदि गाँधी के लिये साक्ष्य है तो अहिंसा उसकी साधना का अनिवार्य मार्ग है। अहिंसा के माध्यम से सत्य की साधना, गाँधी के अनुसार एकान्त प्राणाया को ही नहीं अपितु अध्यवसाय की अपेक्षा करती है। गाँधीजी के अनुसार सत्य का साधक समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण या उत्पीड़न से मुँह मोड़ ही नहीं सकता। अपनी सम्पूर्ण शक्ति व नैतिक जीवन को हर बुराईयों के उन्मूलन के प्रति समर्पित कर देना ही उसकी सत्य साधना का अनिवार्य आयाम है। गाँधीजी के अनुसार सत्यरूपी साध्य की खोज का नैतिक होना अनिवार्य है और यह खोज हम अहिंसा रूपी साधन द्वारा ही कर सकते हैं। सत्य सर्वोच्च कानून है और अहिंसा सर्वोच्च कर्त्तव्य है। सत्य की तरह अहिंसा की शक्ति असीम है।

महात्मा गाँधी के सत्याग्रह पर विचार

हम पाप से घृणा करें, पापी से नहीं। "बापू का यह शब्द निर्भयता, कर्मठता, सादगी, सरलता कितने ही आदर्शो का वाचक बन गया है, क्योंकि गाँधीजी ने सदैव अन्याय का प्रतिकार और न्याय का पूर्ण समर्थन करने का विषम से विषम स्थिति में भी उदाहरण प्रस्तुत किया है। "सत्याग्रह के सन्दर्भ में "बापू" का यह पूर्ण विश्वास एक आधारभूत तत्त्व है। 'हम पाप से घृणा करें, पापी से नहीं"। इस कथन में बुरे कार्य को त्याज्य बताया गया है, व्यक्ति को नहीं। वस्तुतः व्यक्ति के आचरण में, दृष्टिकोण निर्माण में, कितनी ही परिस्थितियाँ उत्तरदायी होती हैं। गाँधीजी ने इसी मान्यता के आधार पर अंग्रेजी शासन की बुराईयों का पूर्ण शक्ति से विरोध किया, व्यक्तिगत रूप में अंग्रेजों के प्रति घृणा का समर्थन नहीं। गाँधीजी का सत्याग्रह दर्शन सत्य के सर्वोच्च आदर्श से उत्पन्न हुआ है। सत्य के पुजारी का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वह सत्य की कसौटी तथा उसके अधिकारियों की रक्षा करें। सत्याग्रह गाँधीजी के अनुसार प्रेम, विश्वास एवं त्याग का द्योतक है जिसमें क्रोध, असत्य तथा घृणा के लिये कोई स्थान नहीं है। यह एक ऐसी कला है जिसमें पशुबल का विरोध आत्मबल से करना होता है।

दक्षिण अफ्रीका से भारत आने के बाद गांधीजी ने अपने राजनीति गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के निर्देशानुसार धैर्यपूर्वक भारतीय परिस्थितियों, जनता की दशाओं और राजनीतिक दलों, संस्थाओं तथा नेताओं के दृष्टिकोणों का पूरे देश भर में घूम-घूमकर अध्ययन किया और ज्यों-ज्यों आवश्यकताएं उत्पन्न हुई और परिस्थितियां सामने आईं, अनेक छोटे-बड़े राष्ट्रीय आन्दोलनों का सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से संचालन किया।

चम्पारण सत्याग्रह

"चम्पारण सत्याग्रह जहां एक ओर गांधीजी के जीवन का बोझिल सत्य है, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय जागरण का लक्ष्य बिन्दु है जिसने 30 वर्षों बाद आजादी का रूप ग्रहण किया। दक्षिण अफ्रीका से विशाल अनुभव तथा परिपक्वता लेकर 22 वर्षों बाद जब गांधीजी 1915 में भारत लौटे तो उन्होंने यहां की धरती पर पहला सत्याग्रह प्रयोग चम्पारण में ही किया, जिसने चम्पारण और गांधीजी को पूरे विश्व में

चर्चित बना दिया"।[4] गांधीजी ने इस आन्दोलन के माध्यम से सत्य, अहिंसा की ताकत क्या है और अशिक्षित तथा निरक्षर जनता के सहारे क्या कुछ किया जा
सकता है, यह सारी दुनिया को दिखा दिया। इन सभी हथियारों का विश्लेषण ही चम्पारण सत्याग्रह का मूलमंत्र था।

अहमदाबाद मिल मालिक-मजदूर आन्दोलन

अभी चम्पारण का काम पूरा भी नहीं हुआ था कि अहमदाबाद में एक गम्भीर समस्या खड़ी हो गई।"जिसमें कपड़ा मिल मजदूरों में बोनस के प्रश्न पर असन्तोष फैल गया मिल मालिकों के प्रतिनिधि सेठ अम्बालाल साराभाई ने बम्बई में गांधीजी को सारा प्रकरण समझाया कि अब मिल मालिक तालाबन्दी करने वाले हैं जिससे व्यर्थ में बर्बादी होगी और हजारों मजदूरों को क्षति पहुंचेगी तथा शहर में भी अशान्ति फैलेगी"।[5] अंततः मिल मालिक गाँधी जी के उपवास से द्रविड़ होने लगे और उन्होंने पंच फैसले की बात स्वीकार कर ली।

खेड़ा सत्याग्रह (1918)

"अहमदाबाद में मजदूरों की हड़ताल समाप्त हुई ही थी कि खेड़ा सत्याग्रह का संघर्ष आरम्भ हो गया जो 15 दिसम्बर 1917 से 6 जून 1918 तक सक्रिय रूप से चला सन् 1917 की अतिवृष्टि और 1918 की अनावृष्टि तथा चूहों के कारण फैले प्लेग की वजह से बम्बई का खेड़ा नामक जिला भयंकर संकट में था"।[6] अतः यहां के किसान अपनी फसलें एकदम से नष्ट होने की वजह से लगान देने में असमर्थ थे। अतः सरकार को इन कारणों को ध्यान में रखते हुए कानून के अनुसार इनके लगान माफ करने चाहिए थे, क्योंकि कानून में ऐसा प्रावधान था कि यदि फसल का तीन-चौथाई भाग नष्ट हो जाए तो लगान माफ कर दिया जाएगा। किन्तु सरकार ने इस संकट की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और बेरहमी से लगान वसूल करती जा रही थी। अच्छे-अच्छे किसानों के हल, बैल, मकान एवं जमीन लगान के एवज में जब्त हो रहे थे और विरोध करने पर काश्तकारों की बड़ी निर्दयता से पिटाई हो रही थी।

बारडोली सत्याग्रह

असहयोग आन्दोलन के स्थगित होने और गांधीजी के जेल जाने के बाद राष्ट्रीय शक्तियां बिखरने लगी, हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े सम्पूर्ण देश में फैल गये थे। इसी समय बारडोली सत्याग्रह जिसकी तैयारियां 6 वर्ष पूर्व की गई थी और जिसे चौरी-चोरा को दुर्घटना के कारण स्थगित करना पड़ा था, पुनः जोर पकड़ने लगा। इसमें किसानों को शोषणकारी भू-राजस्व से मुक्त कराने की समस्या थी।"मुख्य समस्या-सन् 1921 में गुजरात में जब वर्षा के अभाव में अकाल जैसी स्थिति थी तो खेतों में फसलें 20 प्रतिशत से भी कम ही बची थी"।[7] अतः अकाल के कारण किसान लगान देने में असमर्थ थे तो लोगों के लगान नहीं चुकाने से उस समय तो सरकारी अफसर जनता के विद्रोह कर देने की आशंका से कुछ न बोल पाए लेकिन वे अन्दर ही अन्दर खार खाये बैठे थे।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और नमक सत्याग्रह

सरकार द्वारा निर्मित कानूनों को जिन्हें जनता अनैतिक तथा शोषण का साधन समझती है न मानना तथा उन्हें जानबूझ कर तोड़ना ही सरकार की 'अवज्ञा' करना है। यह असहयोग की तुलना से अधिक उग्र अधिक सक्रिय एवं आक्रामक अस्त्र है। गांधीजी के अनुसार सविनय अवज्ञा आन्दोलन का अर्थ 'बुराई का अहिंसात्मक तरीके से प्रतिरोध' करना है। राजनीति में हम उसका अर्थ अन्यायपूर्ण कानूनों से उत्पन्न दोष व बुराइयों का विरोध करने से ले सकते हैं। हमें सविनय अवज्ञा कानूनों के अपराधपूर्ण उल्लंघन से इसका अर्थ नहीं लेना चाहिए। अपराधी कानून का उल्लंघन दण्ड से बचने के

लिए करता है जबकि सत्याग्रही समाज के हित के लिए सरकार से असहयोग करता है। सविनय अवज्ञा करने वाला सरकार के कानूनों के प्रति आदर व श्रद्धा रखता है पर जब वे ही कानून समाज के लिए अहितकर बन जाते हैं तो सत्याग्रही उसका अनादर व अवज्ञा करता है। कानूनों की अवज्ञा करते समय सत्याग्रही दण्ड से भयभीत नहीं होता। सविनय का स्वरूप सुरक्षात्मक व आक्रामक दोनों ही प्रकार का हो सकता है, परन्तु अहिंसात्मक तरीके से।

भारत छोड़ो आन्दोलन

यह गांधीजी का तीसरा राष्ट्रव्यापी संघर्ष था, जिसका उन्हें नेतृत्व करना था। परन्तु आन्दोलन के प्रारम्भ होने से पूर्व ही गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया, जिसके कारण उनकी अनुपस्थिति में संचालित यह एक जन आन्दोलन ही रहा, किन्तु अहिंसक न रह सका। "मार्च 1942 में किप्स मिशन की विफलता से यह स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सरकार भारत के हित में कोई सम्मानजनक समझौते के लिए तैयार नहीं है अतः अप्रैल 1942 में गांधीजी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ब्रिटिश साम्राज्य तुरन्त समाप्त होना चाहिए।"।[8] इसके लिए किसी वापसी के एक पखवाडे बाद ही उन्होंने कांग्रेस कार्यसमिति के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया जिसने ब्रिटेन को भारत छोड़ने के लिए कहा गया तथा भारतीय जनता का आह्वान किया गया कि जापान का हमला हो तो वह उसका अहिंसक प्रतिकार या असहयोग करें गांधीजी ने अपने भाषणों में लोगों को 'करो या मरो' का शक्तिशाली मंत्र दिया। जिससे सम्पूर्ण देश में चेतना का संचार हुआ। उन्होंने कहा कि "हम भारत को स्वतंत्र कराएंगे या मर मिटेंगे, पर अपनी गुलामी को स्थायी बनाये रखने के लिए जीवित नहीं रहेंगे। "गांधीजी ने पत्रकारों, सरकारी कर्मचारियों, सिपाहियों, छात्रों और समाज के सभी वगों से भावी स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने का अनुरोध किया, जिसके कारण इस आन्दोलन में जन सहभागिता पराकाष्ठा पर पहुंच गई"। हिन्दू-मुसलमानों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर आन्दोलन में सहयोग दिया। इस आन्दोलन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि इसके द्वारा आजादी की मांग राष्ट्रीय आन्दोलन की पहली मांग बन गई।

निष्कर्ष एवं सुझाव

सन् 1917 से 1947 तक गांधीजी के ये सभी आन्दोलन क्रमशः अधिकाधिक बड़े होते देखे गये हैं। उद्देश्य एवं समस्याओं की प्रकृति की दृष्टि से चम्पारण, अहमदाबाद और खेड़ा के सत्याग्रह मूल रूप से अराजनीतिक तथा सीमित नागरिक एवं आर्थिक उद्देश्यों को लेकर शुरू किये गये थे और यही उनकी सफलता का आधार भी था। इनके सामने मौलिक अधिकार, पंजीकरण टेक्स, कर भार, बोनस एवं वेतनवृद्धि, राजस्व वसूली का स्थगन आदि सीमित प्रकृति के विषय थे। चम्पारण और अहमदाबाद के सत्याग्रहों में निलहे गोरे और मिल मालिक विरोधी पक्ष थे जबकि अन्य सभी सत्याग्रहों में पूना समझौते को छोड़कर शक्तिशाली विदेशी गौरी ब्रिटिश सरकार थी, जिसके विरुद्ध गांधीजी ने दलित, शोषित, गरीब, अशिक्षित एवं समान धार्मिक विचारों वाली जनता को साथ लेकर अपना सत्याग्रह संग्राम लड़ा था। इन आन्दोलनों में गांधीजी ने अहिंसा को साध्य एवं साधन दोनों मानते हुए प्रयोग किया है। उन्होंने अपने सामान्य वैधानिक उपायों, अपील, वकील, प्रार्थना, प्रतिनिधि मण्डल, जांच, जेल जाना आदि के असफल होने पर व्यापक प्रचार, प्रदर्शन, समाचार-पत्रों एवं जन-आन्दोलनों का सहारा लिया, परन्तु इन सबके अप्रभावी होने की दशा में (धर्म) अहिंसा पर आधारित हड़ताल, बहिष्कार, उपवास, असहयोग, सविनय अवज्ञा आदि सत्याग्रह के विविध अस्त्रों को व्यापक स्तर पर अपनाया। जहां अधिकांश सत्याग्रह आन्दोलनों में उनके अहिंसापूर्ण नेतृत्व को सफलता मिली, वहीं उनकी अनुपस्थिति

में भारत छोड़ों आन्दोलन हिंसापूर्ण हो गया। दक्षिण अफ्रीका एवं भारत के लघु सत्याग्रह आन्दोलनों में उनकी सफलताएँ विरोधी पक्ष में सौहार्द्र, प्रेम, सहमति, सहयोग, निकटता, अधिकारों की स्वीकृति आदि प्राप्त करने में समर्थ हुई। किन्तु हरिजनों को हिन्दू समाज से अलग करने की ब्रिटिश कूटनीति के विरुद्ध उनका आमरण अनशन के द्वारा संघर्ष एक सर्वथा भिन्न श्रेणी का है।

संदर्भ सूची

1. एम.के. गाँधी, यंग इण्डिया, पृ. ३
2. बाइबिल, सर्मन ऑन दी माउण्ट
3. डेविड थोरो, ऐसे ऑन सिविल डिसओबिडियन्स
4. जे. बी. कृपलानी-गांधी एक राजनीतिक अध्ययन, पृ. 12, सर्व सेवा संच, वाराणसी
5. मो.क. गांधी-आत्मकथा, पृ. 38, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबा
6. एम. के. गांधी-द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट विद् दूध, पृ. 532
7. मो.क. गांधी-आत्मकथा, पृ. 52, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद
8. विपिनचन्द्र – पूर्वोक्त, पृ. 429